61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 103

कब तक इंतजार करूँ....

आगे बढ़ना तो बनता है !!

बारिश के दिन में, उसकी आँखों में भी बरसात हो रही थी। दिल्ली शहर के उन गलियों को वह अपने कमरे में बैठकर खिड़कियों से देख रही थी। उन दिनों के बारे में सोचते-सोचते वह अपने आप को भूल गई है। एक ही सवाल उसने अपने आप से पूछा थी- "अब कब तक इंतज़ार करूँ"?...

सिर्फ अठारह साल की लड़की थी रानी बाई, जब वह दिल्ली शहर के इन गलियों में पहुँची थी। उस अजनबी के बातों को कसकर पकड़कर जी रही थी, पर उसकी तकदीर कुछ अलग-सा था। नौजवानी की मासूमियत में उसे यह दुनिया रंग बिरंगी लगा। उसकी छोटी शरीर में इस दुनिया ने इतना बोझ दिया कि, उसकी मन-तन टूट

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 103

गई थी। उसे तो सिर्फ असली प्रेम चाहिए थी। उसको जन्म देते ही उसकी माँ बिना अलविदा कहें चली गई। पापा तो हर समय शराब में डूबती थी, उसके गैरजिम्मेदारी के कारण रानी की बचपन तो कुचला गया था। उसकी दिल में प्रेम की बारिश बरसाते वह आया था। पढ़ाई करने के समय वो दूसरों के घर के काम करने के लिए गई। भूख ने उसे पुस्तक उठाने के जगह में पत्थर उठा लिए। उसकी कपड़ों में ज्यादातार समय कुछ मैल पड़ी होंगी, और उन रंग फीके कपड़ों से चुल्हे के धुआँ का गँध आता था। पढ़ने की इच्छा के कारण, उसने एक दिन अपने पापा से कहा- "पापा.. मुझे पढ़ना है पापा... अच्छे कपड़े पहनना है... सूखी रोटी नहीं... दाल-चावल खाना है..."। पापा ने रानी के तरफ देखकर बोला- " पढ़ते-पढ़ते क्या बनोगी तुम? बरुवास बंद करना! मेरे पास कुछ पैसे नहीं है"। उसके शब्दों में गैरजिम्मेदारी गूँज रहा

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

था। उस कमरे में शराब के, पसीने के और चूल्हे से आते धुआँ के गँध ही नहीं .... उपेक्षाँ भी महसूस कर सकती थी। वह सिर झुकाए, अपने गालों में पड़ा आँसु के नन्हे बूँदों को पोंछते - पोंछते रसोई की ओर चली गई। रानी की आशाओं, प्रतिक्षाओं और सपनों को उस घर में क्या कीमत है? कब तक ऐसा रसोई के चार दिवारों के अंदर अपने आपको सीमित करते जीएँगे? उसे तो पता नहीं।

आखिर उसे उम्मीद देकर एक अजनबी उसकी जिंदगी में आ ही लिया। गोविंद एक बेमौसम बारिश था, न आमंत्रण किए रानी के ज़िन्दगी में प्रेम की बातियाँ जलाकर आया था। रानी नए सपनों सजाने लगी। "तुम बिल्कुल फिक्र मत करो। मैं हूँ तेरी साथ"। - गोविंद रानी के मासुम-सी मुलायम हाँथों को पकड़कर कहता था। उसे लगा कि अब उसकी ज़िन्दगी में एक नए

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 103

मोड़ आने ही वाला है। गोविंद ने रानी को गरीबी और भूख की धूल से बाहर निकाल लिया था, उसे सच्चा प्रेम दिखाया था...। रानी अपनी जान से भी उसे प्यार करती थी। "सुनो रानी... यहाँ रहकर तुम्हारी ज़िन्दगी में कोई फायदा नहीं... मैं तेरी पापा से बात किया था... उसे तो खोटा फर्क नहीं पड़ता तुम्हारे बारे में..." - गोविंद एक दिन रानी की आँखों में देखते कहा था। रानी को वह सच-सा लगा। वह तो सच ही था। "सुनो गोविंद.... मेरी पूरी ज़िंदगी मैं ऐसी किसी अच्छी दिन की इंतज़ार में थी... मैं तेरी साथ आती हूँ" रानी यह कहते समय उसकी आँखों से आँसु की नमकीन बूँदों गालों से होकर नीचे गिरा।

रानी अपनी गाँव के बंधन को काटकर गोविंद के साथ दिल्ली शहर गया था। वहाँ एक कमरा किराया था, दोनों बहुत खुशी से रह रहे थे.... पर एक दिन रानी के दिल में बिजली खड़की! गोविंद के उन

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 103

बातें रानी के अंदर एक तीर जैसे लग गया . . . | "रानी मुझे एक काम के कारण दूसरा शहर जाना होगा | तुम फिक्र मत करो | कुछ दिन के बाद मैं वापस आऊँगा . . ." | - गोविंद मुस्कुराने की कोशिश करते सिर झुकाए कहा था | " हम वहीं पर ही एक काम ढूँढ लेंगे . . . शादी करने के बाद . . . " - रानी डबडबाई आवाज़ में जवाब दिया था |

"मुझे जाना ही होगा . . | मैं वापस आऊँगा . . . यह मेरा वादा है . . ." यह कहकर वो उसकी चेहरे को ध्यान न देकर चली गई | उस दिन से रानी बाई उसकी उम्मीद में बैठी थी | हर दिन वही उम्मीद में रानी की मन धुआँ फूँकते जाते रेलगाडी की तरफ बड़े रफ्तार से लपक रही थी | अगर रेलगाडीयों में कोयला जलता है तो, रानी के अंदर गोविंद ही जल रहा था | एक दिन बित गए . . . दो दिन भी . . . पर गोविंद वापस नहीं आए | एक महीना ही

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

बीत गया था, पर गोविंद की नामुन-निशान भी नही देख पाया। पैसा समय में नही भरने के कारण से वह किराया में लिया घर से भी ~~निकाल~~ उसे बाहर निकाला गया था।

सिर्फ अठारह साल की वह लड़की दिल्ली शहर के उन गलियाँ में बैठना शुरु किया . उस अजनभी की इंतज़ार में...। सिर्फ वो व्यक्ति ~~की~~ ही था, जिसे वह इतना विश्वास करता था। पर अब इस धोखे के वजन वह उठा पाएँगा या नही? किसको पता? उन गलियों में... उस अंजान शहर में... ~~किसी~~ गोविंद नामक वह अजनभी की इंतज़ार में वह बैठा था। वहाँ भीख माँगते दिनों बिताता। दो महीने भी भीत गए...
तभ ही उसे पता चला कि ~~उसके~~ गोविंद के ज़िन्दगी के एक छोटा अंश उसकी अंदर है...। ~~की~~ ~~के~~ अलाविदा के बिना वह उसे छोड़कर गया... पर अपने ज़िन्दगी की एक टुकड़ा देकर गया था।

Item Code: 952 Participant Code: 103

अब कब तक इंतज़ार करूँ ? - यह सवाल वह अपने आप से पूछने लगी। क्योंकि अब वह उस धोखेदार के उम्मीद में बैठना नहीं चाहती। अब वह उसके छोडा गया जीवन की एक अंश को अपनी ज़िन्दगी में आमंत्रण करने वाली है। अब रानी एक माँ बनने जा रही है।

उसकी शरीर से हड्डियाँ कोई भी गिन पाती थी, भूखे मारे पेट में वह एक जीवन को उस अंजान शहर की गलियाँ में ही जन्म दिया। माँ नामक पद जब वह अपनी कमर पर ले लिया, तो उसे जीने की इच्छा मिला।

रानी ने इतनी छोटी उम्र में अपनी आप को समझाई कि - 'अब कब तक इंतज़ार करूँ? उसके इंतज़ार करने की कोई फायदा तो नहीं है'। उस दिन ही उसकी मन बिल्कुल चंगा बनी थी।

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

"माँ . . . . माँ . . . आप कहाँ हो !"
अपनी बेटा के इस सवाल सुनते एक
झटके में रानी बाई अपनी होश में आई।
"मैं यहाँ हूँ बेटा . . मैं तो पुरानी यादों
ताज़ा कर रही थी . . . बाहर देखकर . . . "
यह बोलने के समय रानी बाई के झुरियों
भरे गालों पर आँसू के प्रलय के कारण
दो छोटी नदियाँ का निशान पड़ी थी,
वह अपने नीली साड़ी की कोने से उन आँसुओं
की गीलापन को पोंछ लिया। फिर अपने
माथे पर पड़े सफेद बाल को
कानों के पीछे छिपाया।

" अरे . . माँ आप तो रोते
रोते बहुत थकी दिखती हो" - यह बोलकर
रानी बाई के बेटा राम उसे गले लगा
ली। राम के कारण ही रानी बाई ज़िन्दगी
में आगे बढ़ लिया। कमर-तोड़ काम करके
उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था। उस कमरे
के खामोशी में बहुत

सारी कहानियाँ छिपी हुई थी। उन गलियों से अब रानी बाई अपने बेटे के प्रेम के छत के अंदर सोते हैं। अपने ज़िन्दगी ही खत्म करने की सोच में भी एक ही सवाल उसने अपने आप से पूछा था- 'अब कब तक उसके इंतज़ार करें?' फिर राम को जन्म देते ही उसे उस धोखेदार के इंतज़ार में बैठने से, ज़िन्दगी की हरेक रंग देखने के लिए प्राप्त कर दिया था।

सबक : मानव के ज़िन्दगी में बहुत सारी कठिनाएँ आएँगे... बहुत कुछ हाथ से फिसलेंगे या बहुत लोग छोड़ के जाएँगे... पर उनके या उस चीज़ के इंतज़ार में अपना ज़िन्दगी नाश मत करो... आगे बढ़ो!

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023

Kozhikode

61-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2023 ജനുവരി 3 – 7 കോഴിക്കോട്

Item Code: Participant Code:

CANCELLED

कब तक इंतज़ार करूँ ? . . .

रानी बाई - बूढ़ी . . जो अपने पुरानी ख्यालों पर खो जाता।

शराबी, बाबा,

अजनबी का आगमन

ROUGH

मैं कब तक इंतज़ार करूँ ? . .

दिल्ली शहर के उन गलियों को अपने कमरे पर बैठकर खिड़कियों से वह बूढ़ी देख रही थी।

बारिश के दिन में, उसकी आँखों में भी बरसात हो रही थी।

पुरानी संदूक

सबके ज़िन्दगी में बहुत सारी कठिनाएँ आएँगी.. बहुत कुछ हाथ से फिसलेंगी . . बहुत लोग छोड़ के जाएँगे . . पर उनकी या उसके चीज़ों इंतज़ार में अपना ज़िन्दगी नाश मत करो। आगे बढ़ो

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)